अध्याय - पंचमः
शोध निष्कर्ष एवं सुझाव

१ - अध्ययन के निष्कर्ष
२ - अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष
३ - शिक्षाप्रद तथा सेवानिवृत्त शिक्षिकों के लिये सुझाव
४ - व्यवहारिक सुझाव
५ - अधिष्ठात्र के शोध कर्ताओं हेतु सुझाव
अध्ययन के निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन का प्रथम उद्देश्य “सेवानिवृत्त प्रायमरी तथा माध्यमिक शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति का अध्ययन करना है”, का परीक्षण किया गया है। शोधकर्ताओं ने इसके अन्तर्गत सेवानिवृत्त शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की जीवन के प्रति अभिवृत्ति, सन्तान के प्रति अभिवृत्ति, सामाजिक समान के प्रति अभिवृत्ति, सहयोगियों के प्रति अभिवृत्ति, तथा शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति जानने की कोशिश की है। समस्या के चयन के समय शोधकर्ता ने विभिन्न क्षेत्रों के सेवानिवृत्त अध्यापकों से विचार - विमार किया था, कि उनकी अभिवृत्ति के कौन - कौन से क्षेत्र हो सकते हैं। निक्षेपात्मक रूप से उपयुक्त क्षेत्रों में व्याप्त उनकी अभिवृत्ति जानने की कोशिश की, तो पाया कि अध्यापक रिट्री हो या पुरुष दोनों की अभिवृत्तियाँ उपयुक्त क्षेत्रों में समान रूप से विकसित होती है। इसका प्रमुख कारण है भारतीय समाज और संस्कृति का पारिवारिक प्रभाव। हम भारतीय कितने ही आधुनिक तथा पाश्चात्य समाज में रंग जायें, लेकिन हमारी सोच अपनी मूल सम्पत्ति, मूल्यों और आंदोलनों से हट नहीं पाती है। परिणामस्वरूप हमारा सोच सकारात्मक होकर परिवार से प्राप्त होता है और “वसुधेव कुटुम्बकम्” पर पड़ता है। इसी भाषा का प्रदर्शन शोध प्रयुक्त शिक्षक-शिक्षिकाओं ने अपनी अभिवृत्ति प्रदर्शन में किया है।

तालिका नं. 4.1, 4.2, 4.3 के आधार पर स्पष्ट होता है कि सेवानिवृत्त प्रायमरी तथा माध्यमिक शिक्षकों में अभिवृत्ति सम्बन्धी समानता स्थापित हुई है। इसका कारण दोनों शिक्षक स्तरों के शिक्षकों का सोच, समानता रखता है और उसका निर्माण एक ही प्रकार के पर्यावरण, आदर्श तथा शिक्षा के प्रति समान धारणा, का व्याप्त होता है। यदि शिक्षक में लगन, परिश्रम तथा समर्पण के भाव हैं तो वह तक भी स्तर का शिक्षक हो, उसका सोच सभी क्षेत्रों में समानता रखने वाला ही होता है। इसका समर्थन “डेवीज (1961)”, कोशिंग (1963), जैकब (1968) आदि प्रभुत्वीत विद्वानों ने भी किया है।

इसके साथ ही तालिका नं. 4.4, 4.5, 4.6 में प्रायमरी तथा माध्यमिक स्तरों के शिक्षकों की अभिवृत्ति को, यौन मिलना के आधार पर आकलन करके प्रस्तुत किया गया है। इनके अध्ययन से स्पष्ट होता है कि अभिवृत्ति निर्माण, विकास तथा सम्बन्धित में रिट्री - पुरुष तथा प्रायमरी स्तर के रिट्री-पुरुष की अभिवृत्तियों में असमानता देखने को मिलता है और शेष में नहीं। इसका कारण शिक्षकों का परिवारिक प्रभाव, शिक्षा का प्रभाव, और क्षेत्रीयता का प्रभाव हो सकता है। प्रस्तुत अध्ययन में नगर क्षेत्र, कस्बा क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र आदि परिवर्तों से सेवानिवृत्त रिट्री-पुरुष शिक्षकों की अभिवृत्ति को
जानने की कोशिश की गई है। अतः जो शिक्षको-विद्यार्थियों के शिक्षण में रूढ़ि रखते हैं या शिक्षण को ही अपना व्यवसाय बनाना चाहते हैं वे किसी भी क्षेत्र के रहने वाले होते हैं और किसी भी क्षेत्र में जाकर कार्य करते हैं। इस प्रकार से उनके नगर क्षेत्र का रहन-स्थान, शिक्षा-विद्यालय और सोच आदि का प्रभाव ग्रामीण या कस्बा क्षेत्र के शिक्षण व्यवसाय को प्रभावित करता है। अतः उनकी अभिवृत्तियाँ में अन्तर आता स्वाभाविक है, : जिसको विद्वानों ने सामान्य नहीं माना है। इसका समर्थन मेहरोट्रा (1973) अहलूवलिया (1974), वीनमन (1984), तथा तेसू (1993) आदि विद्वानों ने अपने शोध निष्कर्षों में किया है।

अभिवृत्ति निर्माण पर व्यक्ति की मानसिक योग्यता का सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है। आज शिक्षण-प्रशिक्षण को “कौशल” मानकर व्यवसाय अपनाने को कहा गया है। इसलिये अध्ययन का चयन प्रशिक्षण टेस्ट, तथा अध्ययन का चयन टेस्ट के आधार पर सम्पन्न होते हैं। उच्च मानसिक योग्यता वाले व्यक्तियों में अधिक क्रियाशीलता, ध्यानवानता, सामाजिक शिक्षण साधनों का प्रयोग करना तथा व्यक्तियों के प्रति सम्मान आदि की अधिकता होती हैं, जबकि सामाजिक मानसिक योग्यता वाला अपने कार्य को सामान्य नियममूर्त पूरा करता है। अत: अतिरिक्त सोच के कारण रित्री-पुरुष, प्रायमरी तथा माध्यमिक शिक्षकों में अन्तर होना स्वाभाविक है। इसका समर्थन मितल (1990), मिश्र (1988), आदि विद्वानों ने “सूचनाशील व्यक्तित्व” का नाम देकर किया है। अत: शोध कार्य का प्रथम उद्देश्य शिक्षकों की अभिवृत्ति निर्माण में समानता का समर्थन करता है।

प्रस्तुत अध्ययन की परिकल्पना “सेवानिवृत्त प्रायमरी शिक्षक और शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं होता है “, का परिक्षण किया गया। इस परिकल्पना को जाँचने के लिए तालिका नं. 4.4, 4.5, 4.6 को देखा तो पता चला कि नगर क्षेत्र से सेवानिवृत्त होने वाले शिक्षक/शिक्षिकाएं, अपनी अभिवृत्ति में कोई अंतर नहीं रखती है। इस समय जो शिक्षक (रित्री-पुरुष) सेवानिवृत्त हुए हैं वे ऐसे परिवारों से आये थे जो शिक्षित थे, सामाजिक आर्थिक स्तर से उन्नत थे और उनके अंतर शिक्षक बनने की जिम्मेदार थी। इनको अपने परिवार जैसा ही वातावरण मिला और वे लोग स्वयं को समायोजित करने में सफल रहे। इस प्रकार से कहा जा सकता है कि वंशानुक्रम का प्रभाव, परिवार के वातावरण का प्रभाव आदि, शिक्षकों के व्यवसाय में अन्तर को समाप्त करता है। यहाँ पर रित्री-पुरुष प्रायमरी शिक्षक को वातावरण की समानता मिली है। इसीलिये दोनों के मध्यमानों में भी समानता है जिनका अन्तर 0.84 रहा है जिसका क्रांतिक अनुपात 1.0 रहा है जो 0.01 तथा 0.05 किसी भी विश्वास स्तर
पर सार्थक नहीं रहा है। अतः यह सिद्ध होता है कि नगर क्षेत्र के प्रायोगिक शिक्षकों
(स्ट्री-पुरुष) की सेवा निःस्वाति अभिवृत्ति में अन्तर नहीं होता है। इसी प्रकार के निष्कर्ष
"डोरोथी (1952), डेवीज (1961) तथा वर्मा (1968) और कुरेशी (1972) ने भी अपने
शोधों के निष्कर्षों से दिये हैं।

सेवानिःस्वाति प्रायोगिक शिक्षक—शिक्षिकाओं की कर्मा क्षेत्र तथा ग्रामीण
क्षेत्र की तालिका को देखने से स्पष्ट प्रतीत होता है कि दोनों की अभिवृत्ति में अन्तर
होता है। कर्मा क्षेत्र के प्रायोगिक शिक्षकों (स्ट्री-पुरुष) के मध्यमान का अन्तर 2.08 रहा
है। इसका क्रिटिकल अनुपात 3.65 रहा है जो दोनों वर्गों की अन्तर की सार्थकता प्रमाण
करता है। चूँकि कर्मा क्षेत्र में जनसंख्या वृद्धि ग्रामीण क्षेत्रों से आकर बसे हुए लोगों से
होती है। अतः प्रायोगिक क्षेत्र के जो शिक्षक या शिक्षिकायें 1998 तक में सेवानिःस्वाति हुये
हैं, उनमें कर्मा क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र दोनों ही परिवेश के लोग समिलित हैं। इन दोनों
में क्षेत्र का, शिक्षा का, मूल्यों का, परिवार के संस्कारों, आदि का अन्तर होता है। यह
अन्तर इनके सोच को व्यवहारिक बनाता है, जिसका प्रभाव उनके शिक्षण व्यवसाय पर
भी परिलक्षित हुआ है। इस प्रकार के निष्कर्ष वीराराघवन (1987), पीटर (1978),
शमसेरी (1982) आदि के शोध निष्कर्षों से भी प्राप्त हुये हैं।

इसी तरह से ग्रामीण क्षेत्र के सेवानिःस्वाति प्रायोगिक स्तर के शिक्षक तथा
शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तालिका 4.6 को देखने से प्रतीत होता है कि दोनों वर्गों की
अभिवृत्ति में अन्तर होता है। इनके मध्यमान का अन्तर 1.46 रहा है तथा क्रिटिकल
अनुपात 3.9 रहा है जो दोनों वर्गों के अन्तर की सार्थकता को प्रमाण करता है। इनका
मुख्य कारण दोनों वर्गों की जागरूकता, समर्पण तथा कार्य निष्ठा आदि के भावों में
सिखना का होना है। हमारे देश में शिक्षा स्तर (महिलाओं) बहुत ही गिरा हुआ रहा है।
जो स्ट्री शिक्षक 1988 से 1998 तक में सेवानिःस्वाति हुये हैं, वे तीस के दशक में जम्भें
होंगे। उस समय हमारे देश में अनुप्रेणों का शासन रहा था और शिक्षा का विकास भी
बहुत कम था। जो भी स्ट्री-पुरुष शिक्षित थे वे नगरों तथा कस्बों से आये थे। वे लोग
कम वेतन पर इसीलिए जीवन यापन करते थे कि वे अपने देश वासियों को साक्षर बनाना
चाहते थे। जबकि पुरुष शिक्षक की मानसिक दशा भिन्न थी। वे शिक्षक बनना एक
व्यवसाय मानते थे, जबकि साथ में खेती का कार्य भी देखते थे। इस प्रकार से स्ट्री
शिक्षिका की पूरी ऊर्जा बच्चों के शिक्षण में लगाती थी और वे उनको एक आदर्श
बालिका बनाना चाहती थी। इसके साथ ही पुरुष शिक्षक, शिक्षण को व्यवसाय के रूप
में लेता था और बच्चों को नियमित ज्ञान देने की कोशिश करता था। परिणाम स्वरूप दोनों वर्गों के साथ में मिन्नता होनी स्वाभाविक है। अभिवृत्ति के उक्त अध्ययन जेकब (1968), डेवीज (1961), अहलूयालिया (1974), सर्वांनंद (1988) मेंर (1969) आदि द्वारा प्रस्तुत निष्कर्षों से प्रमाणित होते हैं।

उपरुपक्त विवेचना से शोधकर्ता इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि सेवानिवृत्त प्रायमय शिक्षकों (स्त्री-पुरुष) की अभिवृत्ति में अन्तर होता है। यदि इनकी अभिवृत्ति के निर्माण पर प्रभाव डालने वाले कारक आपस में मिन्नता लिये हुये हैं तो दोनों वर्गों की अभिवृत्ति में अन्तर होना स्वाभाविक होता है। यदि दोनों वर्गों के प्रायमय शिक्षकों को समान पर्यावरण मिले तो इस अन्तर को कम किया जा सकता है, समानता नहीं। अतः प्रस्तुत परिकल्पना सेवानिवृत्त प्रायमय शिक्षक और शिक्षकों की अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं होता है, स्वीकृत एवं सिद्ध नहीं हुई है।

शोधकर्ता की द्वितीय परिकल्पना, “सेवानिवृत्त माध्यमिक शिक्षक और शिक्षकों की अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं होता है,” का परीक्षण किया गया। इस हेतु शोध कर्ता ने तालिका सं. 4.4, 4.5, 4.6 का अवलोकन किया और पाया कि माध्यमिक स्तर के शिक्षक और शिक्षकों की अभिवृत्ति का आकलन, नगर क्षेत्र, कस्बा क्षेत्र और ग्रामीण क्षेत्र आदि में अलग-अलग से देखना होगा। उसमें नगर क्षेत्र के, सेवानिवृत्त माध्यमिक शिक्षक और शिक्षकों की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया है। इसका प्रमुख कारण उनके व्यक्तित्व की विश्लेषण तथा प्रशिक्षण का प्रभाव हो सकता है। शिक्षक वर्ग व्यवसायिक तथा भौतिकवादी बनता जा रहा है। उसमें शिक्षा क्षेत्र के अलावा अन्य क्षेत्रों में भी सफलता प्राप्त करने की लालसा रहती है। वह अपनी बुद्धि का प्रयोग व्यवसाय, राजनीति, सामाजिक तथा धार्मिक क्षेत्रों में भी करता है ताकि वह समाज में अधिक सम्मान पा सके। इसके विपरीत महिला शिक्षकों स्तर की क्षमता को अपने शिक्षण कार्य के प्रति ही समर्पित करती है। वे सिर्फ अपने परिवार और विद्यालय तक ही सीमित रहती है। उनका व्यक्तित्व विकास अनुमोदक होता है। परिणाम स्वरूप उनके प्रभाव का क्षेत्र बहुत ही सीमित रहता है। इसीलिये पुरुष तथा स्त्री अध्ययक्ष की अभिवृत्ति में अन्तर प्रतीत हुआ है। इसका समर्थन व्यक्तित्व और व्यवसायिक अभिवृत्ति के अध्ययनों, सर्वांनंद (1988), अशोक (1993), तेसू (1993), प्रेम-दर्श (1970), गुरु (1979) आदि द्वारा किये गये हैं।

कस्बा क्षेत्र के तथा ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के सेवानिवृत्त शिक्षक तथा शिक्षकों की अभिवृत्ति में कोई भी अन्तर नहीं आया है। इनके मध्यमान अन्तर 0.88 तथा 0.4 रहे हैं। इनके क्रांतिक अनुपात 1.8 तथा 1.1 रहे हैं। ये दोनों ही
मूल्य किसी विश्वास स्तर पर अपनी प्रामाण्यता प्राप्त नहीं करते हैं। इन दोनों क्षेत्रों के स्त्री-पुरुष शिक्षकों की अभिवृत्ति में अंतर न होने का कारण उनके परिवेश का प्रभाव तथा उनके संस्कार और प्रशिक्षण की प्रतिवेदना हो सकते हैं। पार्वत (1908), बार (1929), कल्पना (1992), मेहरान्त्रा (1973), आदि ने अपने अध्ययनों से शिक्षक परिवेश का अभिवृत्ति के विकास में सहायक माना है, जिससे उनमें समान सोच पैदा होता है और वे क्रियाशील रहते हैं। गाँवों के द्वारा ही कस्बों का निर्माण होता है। उनके वातावरण और ग्राम के वातावरण में अधिक अन्तर नहीं होता है। पीढ़ी का सोच तथा पारिवारिक प्रवृत्तियों को एक दम से नहीं बदलती है। ये संस्कार के रूप में परिवार में, समाज में और समुदाय में जीवित रहती है जो सदस्यों को प्रभावित करती है। तालिका संख्या 4.17 में कस्बा तथा ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षकों के बीच सहसंबंध प्रदर्शित किया गया है जो स्थानात्मक बढ़ता है। यह भी स्पष्ट करता है कि अभिवृत्ति सामाजिक परिवेश से सम्बंधित होती है। इससे साथ ही शिक्षण प्रशिक्षण का ग्राम में कस्बा क्षेत्र के तथा ग्रामीण क्षेत्र के अध्यापक तथा अध्यापिकाओं पर सकारात्मक रूप से पड़ता है। वे इस पवित्र और अनौठा मानते हैं। “शिक्षक” शब्द का आज भी कस्बा तथा ग्रामीण क्षेत्रों में सम्मान-आदर है। प्रत्येक व्यक्ति इन्होंने विशेष व्यक्ति के रूप में देखता है क्योंकि वे नौनिशालों को कल का नागरिक बनाते हैं। ये शिक्षक बड़े ही मनोदेश से प्रत्येक बच्चे को ज्ञान देते हैं। इनमें से कभी भी प्रकार की जाति, धर्म, समृद्धि, आदि की भिन्नता नहीं की जाती है। इस निकश्क का समर्थन कोरिगन (1963), वर्मा (1968), जेकब (1968), कुंवरेश्वर (1972) आदि ने अपने अध्ययनों से किया है।

उपर्युक्त विवेचनाः से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर के सेवानिवृत्त शिक्षक और शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति ग्रामीण क्षेत्र, कस्बा क्षेत्र में अंतर नहीं होता है, लेकिन नगर क्षेत्र में अंतर होता है। शोधकर्ता का अनुमान इस अन्तर को नक्सलता है। अतः शोधकार्य में ये परिकल्पना स्वीकृत तथा सिद्ध होती है कि माध्यमिक शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में अंतर नहीं होता है।

प्रस्तुत अध्ययन की तृतीय परिकल्पना-“नगर, कस्बा तथा ग्रामीण क्षेत्र की शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में कोई अंतर नहीं होता है”, का परिकल्पना किया गया। ये परिकल्पना माध्यमिक तथा प्रायमरी स्त्री-पुरुष अध्यापकों जो, नगर क्षेत्र, कस्बा क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र आदि कहीं से सेवानिवृत्त हुये हों, उनकी अभिवृत्ति से सम्बंध रखती है। मध्यमान तालिकाओं से स्पष्ट होता है कि नगर क्षेत्र, कस्बा क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक तथा प्रायमरी शिक्षकों की अभिवृत्ति में समानता अधिक प्रकट
हो रही है और भिन्नता कम। इसका मुख्य कारण शिक्षक व्यक्तित्व का निर्माण एवं विकास माना जा सकता है। शिक्षक व्यक्तित्व उनके वंशानुक्रम, व्यवहार और प्रशिक्षण आदि परिवर्तनों से मिलकर विकसित होता है। वैयक्तिकता के आधार पर सभी व्यक्तियों में समानता और असमानता होती है, लेकिन उनका विकास संस्कारों के आधार पर होता है। इस प्रकार से वह शिक्षा प्राप्त करके स्वयं सफल नागरिक बनता है, फिर वह शिक्षा व्यवसाय का चुनाव करके प्रशिक्षण लेता है, जो सभी छात्राध्यापकों के लिये समान होता है। 1970 के दशक में “प्लेजर्स” महोदय ने अपने शोधकार्य के द्वारा “शिक्षक व्यक्तित्व” को समानता के आधार पर विकसित करने की कोशिश की है। प्रशिक्षण द्वारा, प्रत्येक अध्यापक छात्र–छात्रा में बच्चों को समानता व्यक्तित्व का विकास करना, शिक्षण विश्लेषण का प्रयोग, विद्यालय व्यवस्था करना, आधुनिक तकनीक को बनाना तथा इतिहास और वर्तमान शिक्षा की आवश्यकता में समानता बनाना आदि में निपुणता प्रदान की जाती है। इस प्रकार से सभी प्रशिक्षणप्रदाताओं का समान विकास होता है। परिणामस्वरूप शिक्षकों में भी अभिवृत्ति का समान विकास होता है। इसके साथ ही शिक्षक व्यवसाय के प्रति जागरूकता, समर्पण तथा विकास की दिशाओं कुटनाय भी समानता स्थापित करती है। शिक्षकों की अभिवृत्ति में समानता का होना का समर्थन “प्लेजर्स” (1908), काफ्लैन (1954), डेडीज (1961), भार्गव (1962), कोरित्सन (1963), आदि विद्वानों ने अपने–अपने शोध निष्कर्षों से किया है। अतः शोध कर्ताओं की यह परिकल्पना “शहरी, कर्नल तथा ग्रामीण शिक्षक – शिक्षकों की अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं होता है, “स्वीकृत एवं सिद्ध होती है।”

शोधकार्य की चुनौती परिकल्पना संदर्भित करेंगे श्रीराम शिक्षक-शिक्षिकाओं की समस्याओं में कोई अन्तर नहीं होता है, का परीक्षण किया गया। इस हेतु तालिका संख्या 4.10, 4.11 तथा 4.12 के विश्लेषण के स्पष्ट होता है कि पुरुष तथा महिला शिक्षकों की समस्याओं में सार्थक अंतर आया है। नगर क्षेत्र के क्रिटिकल अनुपात 4.17, कस्बा क्षेत्र का 3.0 तथा ग्रामीण क्षेत्र का 2.04 रहा है। इससे स्पष्ट होता है कि शोधकर्ताओं ने जिन समस्याओं (मनोवैज्ञानिक, शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक) को जानने की कोशिश की है, वे अपने-अपने प्रभावविश्लेष अथवा प्रायमहीश शिक्षक और शिक्षकों में अंतर स्पष्ट करती है।

1990 का दशक, संसार में परिवर्तन और परिवर्तन लाने वाला रहा है। इसने जहाँ मानव हितों का ध्यान व्यक्तित्व विकास के लिये रखा है, वहाँ पर "वस्तुपौरुष कटुम्बकम" की भावना का विकास धौ एनो ओर के माध्यम से बिना किसी , धर्म जाति और सम्प्रदाय के किया है। आज संसार के सभी स्त्री-पुरुषों की स्वतंत्रता, समानता,
सहकारिता के जनतंत्रीक मूल्यों का विकास करने के अधिक से अधिक अवसर मिलें हैं। परिणाम स्पर्श प्राइमरी शिक्षक भी इससे प्रभावित हुआ है। इनमें भौतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं नैतिक परिवर्तन हुये हैं। इन शिक्षकों के समायोजन सिद्धान्त के कारण एक वर्ध आधुनिक बना, द्वितीय पुरातन के साथ आधुनिक तथा तृतीय पुरातन में संशोधन करके आधुनिक बना। अतः इस दैनिक भौतिकवादी (भोगवादी) संस्कृति के प्रभाव ने प्रायमरी शिक्षकों की समस्याओं को भी प्रभावित किया है। परिणाम स्वरूप उनकी समस्याओं में अन्तर स्पष्ट होता है। इसका समर्थन समाजिक शोधकार्यों "बार" (1929), डोरोथी (1952), बोबी (1962), ग्रे (1963), तेसू (1993) आदि ने किया है।

यदि हम प्राइमरी शिक्षक के व्यक्तित्व विकास पर ध्यान दें तो स्पष्ट होता है कि पुरुष–महिला शिक्षक चाहे वह नगर क्षेत्र का हो, कस्बा क्षेत्र का हो या प्रामीण क्षेत्र का हो, में समानता और मिन्नता होती रही है। इस पर उनके परिवार, शिक्षा, संस्कार, मूल्य तथा प्रशिक्षण के प्रभाव के कारण परिवर्तन होते हैं। यदि परिवर्तन उनमें मिन्नता स्थापित करने के कारक बनते हैं। पर्यावरण वादी इस बात को मानते हैं कि व्यक्ति जिस वातावरण में, क्षेत्र में निवास करता है, व्यवस्था करता है, उसका प्रभाव उसके दैनिक जीवन पर पड़ता है। यदी दैनिक प्रभाव धीरे–धीरे स्थायी होकर उनके व्यक्तित्व की विशेषता बन जाता है। यदी व्यक्तित्व विशेषताएं उनकी दैनिक जीवन की समस्याओं को प्रभावित करती है। परिणाम स्वरूप व्यक्तिगत रूप से सेवानिवृत्त प्राइमरी शिक्षकों की समस्याओं में अन्तर होता है। इस प्रकार के निष्कर्ष "प्रतिमा" (1983), ओइपेन (1976), झा (1990), आदि ने अपने निष्कर्षों में दिये हैं।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में "शिक्षण स्वयंविराम" पर हुई गोष्टियों ने अध्यापक पर कल्याणशील और यथार्थवादिता के प्रभाव को भी मिन्नता का एक कारक माना है। जो शिक्षक कल्याणशील होते हैं, वे नये–नये प्रयोग करते हैं तथा उनके द्वारा इस विशेषता को अध्यापक वर्ग में प्रगट करते हैं। इसके विपरीत जो लोग यथार्थवादी और परमपरागत होते हैं, वे स्वयं को शिक्षण तकनीक के अनुसार चलते हैं और उसी की छात्रों पर भी लागू करते हैं। शिक्षक–वर्ग में एक समूह ऐसा भी होता है जो स्वयं को कल्याणशील बनाते हैं। लेकिन इसी निष्कर्ष न लिने पर निराश भी शीघ्र हो जाते हैं। अत: विचारशीलता, कल्याणशीलता, यथार्थवादिता, और परमपरागत विचार भी शिक्षकों (रित्री–पुरुष) में मिन्नता स्थापित करते हैं। इनका समर्थन प्रशिक्षकों (रित्री–पुरुष) के मिन्नता स्थापित करते हैं। मनोवैज्ञानिक "गार्ड" (1948), थार्न्रडायक (1930) तथा वाटसन आदि ने कही है। अत: शोधकार्य की परिकल्पना सेवानिवृत्त प्राइमरी शिक्षक–शिक्षकों की समस्याओं में कोई अन्तर नहीं।
होता है, पूर्णरूप से अस्वीकृत होती है।

शोधकर्ता की पंचम परिकल्पना “सेवावृत्ति माध्यमिक शिक्षक—शिक्षिकाओं की समस्याओं में कोई अन्तर नहीं होता है,” का परीक्षण किया गया। नगर क्षेत्र से सेवावृत्ति शिक्षक—शिक्षिकाओं की अंकलन तालिका का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि पुरुष वर्ग का मध्यमान 25.48 तथा महिला वर्ग का मध्यमान 27.88 रहा है। दोनों मध्यमानों का अन्तर 2.40 रहा है। इनका क्रिटीकल अनुपात 4.9 रहा है। यह मूल्य 0.01 विश्वास स्तर पर दोनों वर्गों में मिन्नता स्पष्ट करता है। विद्वानों के अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि दो शिक्षित वर्गों में या व्यवसायों में अन्तर उनके सामाजिक—आर्थिक स्तर तथा आदर्श और मूल्यों के हारा स्थापित करतव्य परायणता के कारण होता है। दोनों वर्ग व्यवसाय से प्राप्त धन में समानता रखते हैं, लेकिन दोनों के स्वभाव में, धन के व्यय करने के तरीकों में, तथा सामाजिक और पारिवारिक आवश्यकताओं के कारण होने वाले अन्तर के कारण धन की आपूर्ति और व्यय में मिन्नता हो सकती है। धन की मिन्नता दोनों की सामाजिक—आर्थिक स्थिति में असमानता पैदा करती है। इसके साथ ही महिला वर्ग धन की बचत करता है, इसका सही उपयोग करता है, दिखाया न चाहिए वार्ता पर ही व्यय करता है तथा कम में ही कार्य—करता है जबकि पुरुष वर्ग दिखाये में विश्वास करता है, धन व्यय को अपना सम्मान मानता है, तथा धन को सम्मान का प्रतीक मानता है। इन निष्कर्षों का समर्थन “विनिकेत (1968), दयाल (1983), अन्जुम (1985), सन्तोष (1991) आदि के शोध निष्कर्षों से भी भित्र है।

इसके साथ ही कस्बा क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र के सेवावृत्ति माध्यमिक स्तर के रिश्ते—पुरुष वर्ग में समस्याओं से सम्बन्धित कोई भी मिलता देखने को नहीं मिली है। इन क्षेत्रों के दोनों वर्ग के शिक्षकों की समस्याओं में समानता होने का कारण क्षेत्र की समानता, सोच की समानता, तथा जीवन स्तर की समानता का होना ही सकता है। क्षेत्रीय दृष्टिकोण से देखा जाता है तो स्पष्ट होता है कि बड़े गाँवों का विकास ही आज कस्बा का रूप ले लेता है। ये कस्बे क्षेत्र विशेष गाँवों के प्रशासनिक सुविधाओं देते हैं तथा उन पर नियन्त्रण भी स्थापित करते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के लोग इन कस्बों में आकर अपने रोजाना के कामों तथा आवश्यकताओं की पूर्ति भी करते हैं। अतः कस्बा क्षेत्र तथा गाँव क्षेत्र की भौगोलिक, सौंदर्यकृति, आर्थिक, सामाजिक आदि सभी आवश्यकताओं एक जैसी होती है। यद्यपि आवश्यकताओं उनकी समस्याओं का जन्म व विकास भी करती है। जो शिक्षक समान पर्यावरण में रहता है और समान आवश्यकताओं की पूर्ति करता है तो उसका सोच चिन्तन भी एक ही तरह का होता जाता है जो उसकी समस्याओं को
प्रभावित करता है। इसके साथ ही कस्बा क्षेत्र के माध्यमिक अध्यापक और ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक अध्यापकों में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समानता मिलती है। ये भाषा का प्रयोग, मितव्यविता, सामान्य रहन-सहन, परिवार तथा समाज के प्रति जागरूकता, तथा व्यवसायिक समान भुनाना, आदि में भी समानता रखते हैं। इन लोगों में बनावटीपन कम होता है और यथार्थ की बात हमेशा सोचते हैं। ये सादा जीवन उच्च विचार की जीवन शैली को अपनाते हैं। जबकि नगर के माध्यमिक शिक्षक “उच्च जीवन” को प्रभावित देते हैं। इन निष्कर्षों का समर्थन “पायने (1962), सिवधा (1969), सिंह (1962), चौपरा (1966), माझुर (1972), आदि विद्वानों के निष्कर्षों से होता है। अतः स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत परिकल्पना नगर क्षेत्र के माध्यमिक अध्यापकों पर सिद्ध नहीं होती है तथा कस्बा क्षेत्र और ग्रामीण क्षेत्रों के सेवानिवृत्त स्त्री-पुरुष अध्यापकों पर सिद्ध (स्वीकृत) होती है।

शोधकार्य की छतरी कथा अंतिम परिकल्पना “सेवानिवृत्त शहरी (नगर) कस्बा, तथा ग्रामीण शिक्षक-शिक्षिकाओं में कोई अन्तर नहीं होता है,” का परीक्षण किया गया। प्रस्तुत परिकल्पना में “समस्या” को केन्द्र बिन्दु मानकर शोधकार्यों ने सम्पूर्ण प्रायमरी तथा माध्यमिक शिक्षकों (स्त्री-पुरुष) का अध्ययन किया है। अतः हम यहाँ पर अपनी परिकल्पना में नगर क्षेत्र, कस्बा क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र आदि के आधार पर सभी शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की समस्याओं पर प्रकाश डालेंगे। तालिका संख्या 4.13 से स्पष्ट होता है कि नगर क्षेत्र बनाम ग्रामीण क्षेत्र में अन्तर है जबकि नगर क्षेत्र बनाम कस्बा क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र बनाम कस्बा क्षेत्र में कोई भी अन्तर नहीं आया है बल्कि धनात्मक सम्बन्ध स्थापित हुआ है।

तालिका संख्या 4.14 से स्पष्ट होता है कि शिक्षकों (स्त्री-पुरुष) की मनोवैज्ञानिक समस्याओं और अभिवृत्ति में धनात्मक सम्बन्ध है जो यह प्रमाण करता है कि व्यक्ति का सोच, विचार, दृष्टि कोण तथा अवधारणायें इनकी मनोवैज्ञानिक समस्याओं पर प्रभाव डालती हैं। तालिका संख्या 4.15 से स्पष्ट होता है कि सेवानिवृत्त शिक्षकों की अभिवृत्ति का उनकी शारीरिक समस्या पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है क्योंकि शारीरिक समस्या आयु के कारण अधिक उत्पन्न होती है। तालिका संख्या 4.16 में अभिवृत्ति और आर्थिक समस्या को स्पष्ट किया गया है। इसमें तीनों ही क्षेत्रों के प्रायमरी तथा माध्यमिक अध्यापक (स्त्री-पुरुष) प्रभावित हो रहे हैं। यानी धन की प्रभुशास्त्र उनके जीवन के सुखी बनाती है। इसी प्रकार से सामाजिक समस्या का प्रभाव भी धनात्मक रहा है। क्योंकि व्यक्ति का मन ही दुःख और सुख का कारण बनता है। अतः
सामाजिक परिवर्तन को सहर्ष स्वीकार करना ही मन को दृढ़ता प्रदान करता है। इससे सिर्फ माध्यमिक स्तर का उच्च वर्ग ही भिन्नता रखता है। तात्त्विक संख्या 4.18 में अभिवृत्ति और सांस्कृतिक समस्या के संबंध को स्पष्ट किया गया है। जिससे स्पष्ट होता है कि सभी क्षेत्रों के प्रामाणीयता तथा माध्यमिक अध्यापकों (स्त्री-पुरुष) का समायोजन सांस्कृतिक परिवर्तनों के साथ नहीं हो पा रहा है। परिणामः स्वरूप इनमें ऋणात्मक सहसम्बन्ध स्थापित हुआ है।

यदि हम तात्त्विक संख्या 4.19 तथा 4.20 के देखें तो स्पष्ट होता है कि नगरक्षेत्र, कर्षा क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र आदि के प्रामाणि तथा माध्यमिक (स्त्री-पुरुष) अध्यापकों में समस्या समृद्धि समानता है। इनमें समस्याओं का प्रारंभिक क्रम मनोवैज्ञानिक, शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक स्तरों पर रहा है। इससे स्पष्ट होता है कि प्रामाणिता तथा माध्यमिक स्तरों के द्वी-पुरुष शिक्षकों में समस्याओं का वितरण समान रूप से होता है। उनमें गुणात्मक अन्तर होता है न कि मात्रात्मक। शोधकर्ता ने शोधक्षेत्र में वार्ता लाये द्वारा किया कि मन की भावना, विचारों की धारणा तथा भविष्य निर्धारण के भव आदि समस्याओं के विकास में सहयोग देते हैं। यही विचार मैंनेक्सट, लियोडर तथा जेम्स आदि मनोवैज्ञानिकों के रहे हैं।

समाज शास्त्रियों का मानना है कि सेवानिवृत्त व्यक्ति किसी भी क्षेत्र का हो, या किसी भी व्यवसाय का हो, उसे समस्याओं का सामना करना ही होता है। यदि उसके पास सभी साधन मौजूद हैं फिर भी वह अपने मानक से विचलित होता ही रहता है। इसी को आर्थिक वालियों ने संसार का प्रभाव माना है। मनोवैज्ञानिक, शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक समस्याओं से सभी व्यक्ति जुड़ते हैं अन्तर सिर्फ उनके सामना करने के तरीके में तथा समाधान में होता है। आज के मनोवैज्ञानिक तथा समाज शास्त्री मानव समाज के विघटन के बारे में परेशान हैं। ये विघटन इन्हीं समस्याओं की तीव्रता के कारण और इनके साथ समायोजन न हो पाने के कारण हो रहे हैं।

सेवानिवृत्त माध्यमिक तथा प्रामाणिता स्त्री-पुरुष शिक्षकों की अभिवृत्ति तथा समस्याओं का विवेचन करने पर यह निर्धारण किया गया है कि शिक्षण कार्य का प्रशिक्षण समान होने पर भी, माध्यमिक तथा प्रामाणि तथा पुरुष तथा स्त्री वर्ग के व्यक्तित्व तथा स्वभाव बनावट की भिन्नता, अभिवृत्ति निर्माण तथा समस्याओं का सामना करने में भिन्नता स्थापित करते हैं। समस्यायें समान होती हैं, लेकिन उनके सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों को शिक्षक को ही महसूस करना होता है। अतः समस्या प्रमुख नहीं होती है बल्कि वह व्यक्ति प्रमुख होता है, जो समस्या से प्रभावित हो
रहा है। इस प्रकार से शोधकर्ताओं ने समस्याओं और अभिवृत्तियों पर संवादित शिक्षकों से समन्वित निम्न निष्कर्ष ज्ञात किये हैं :-

1) संवादित अध्यापक – अध्यापिका वर्गों में अभिवृत्ति का विकास एवं निर्माण समानता लिये हुये पाये गये, लेकिन उनका प्रकाशन किन्ही क्षेत्रों में मिलना लिये हुये हैं।

2) कुछ अभिवृत्तियों में पुरुष वर्ग संवादित अध्यापक प्रमुख रहे हैं और कुछ में अध्यापिका वर्ग।

3) अभिवृत्ति का सम्बन्ध संवादित की समस्याओं के साथ धार्मिक रहा है बाहर वे नगर क्षेत्र, कस्बा क्षेत्र या ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक या प्राइमरी स्तर के हों।

4) पुरुष तथा महिला अध्यापकों में संवादित समस्यायें समान रूप से और समान स्तर पर समानता लिये हुये पाई गई।

5) शिक्षा के दोनों ही स्तर के संवादित अध्यापकों में समस्याओं के गुणात्मक अन्तर स्थापित हुये हैं, मात्रात्मक नहीं।

6) सबसे प्रमुख समस्या मनोवैज्ञानिक रही है और सबसे कमजोर समस्या सांस्कृतिक रही है।

7) संवादित शिक्षक या शिक्षिका, सामाजिक प्राणी होने के कारण अपनी वैयक्तिकता से प्रभावित होते हैं। अतः उनकी अभिवृत्ति और समस्याओं का क्षेत्र इतना व्यापक है कि उनके निष्कर्षों में अन्तर आना स्वाभाविक हो जाता है। इसलिये शोधकर्ताओं ने अध्ययन अभिवृत्ति और समस्याओं को केन्द्र मानकर किया है ताकि उनका सही ऑकलन प्रस्तुत हो सके। इस प्रकार से शोधकर्ताओं की परिकल्पना शिक्षक समस्याओं में कोई अन्तर नहीं होता है, स्वीकृत के अवस्था होती है।

शोध के विस्तृत निष्कर्ष :-

शोधकार्य की परिकल्पना की स्वीकृत तथा अस्वीकृत की सिद्धि का वर्णन करने के पश्चात अध्ययन के विस्तृत निष्कर्षों को प्रस्तुत करना शोधकर्ताओं का प्रमुख कर्तव्य हो जाता है। शोधकार्य के कुछ तत्वतत्त्व निष्कर्ष निम्नांकित हैं :-

1) प्रस्तुत अध्ययन ज्ञानीजनपद की पाँच तह्सीलों में संवादित अध्यापन की अभिवृत्ति के विकास करना शोधकर्ताओं का प्रमुख कर्तव्य हो जाता है। इनको नगर क्षेत्र, कस्बा क्षेत्र, तथा ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न करके तथ्यों का संकलन किया गया है। इनकी अभिवृत्तियों को जीवन के प्रति, संतान के प्रति, सामाजिक समान के प्रति, सहयोगियों के प्रति तथा विशेषण व्यवहार के प्रति और समस्याओं को मनोवैज्ञानिक, शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक
तथा सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों में बॉट कर अध्ययन किया गया है। इन दोनों परीक्षयों में पूर्ण सार्धक भिन्नता स्पष्ट नहीं हुई है। इसका कारण शिक्षक व्यवसाय का प्रशिक्षण तथा शिक्षक की कर्तव्य निदान होता है। विद्यार्थी (1978), ने स्पष्ट किया है कि शिक्षक जीवन भर बच्चों के भविष्य को बनाता है, लेकिन संयुक्त दृष्टिकोण (व्यवसाय) के कारण वह अपने साथ न्याय नहीं कर पाता है। जिससे सेवानिवृत्ति के पश्चात वह समस्याओं से ग्रसित हो जाता है। अतः सेवानिवृत्तियों अध्यापक को समस्याओं से निषाज दिलाने के लिए या उनके साथ सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने के लिये निम्न बातो पर ध्यान देना चाहिये।

(अ) शिक्षकों को समान वेतन-भत्तो, पैन्सन, मेडिकल, ग्रेच्युटी आदि की व्यवस्था प्रशासन को करनी चाहिये चाहे वह शिक्षक नगर क्षेत्र का हो, कस्बा क्षेत्र का हो या ग्रामीण क्षेत्र का हो।

(ब) शिक्षक, एक व्यवसायिक जाति, के रूप में परिभाषित होना चाहिये, चाहे वह उच्च शिक्षा, माध्यमिक या प्राथमिक रंग का हो। इससे सभी में समानता, सहयोग और भाई चारे का भाव जागृत होता है।

(स) शिक्षकों को स्वावलंबी तभी बनाया जा सकता है जब प्रशासन एवं समाज उनको मान सम्मान दे और उनके कार्य को नीकरी व्यवसाय न मानकर “मानवसेवा” माने। इस प्रकार से समाज के सकारात्मक सोच के कारण उनकी समस्याओं का समाधान स्वयं ही हो जायेगा।

(द) प्रस्तुत अध्ययन में अभिवृत्तियों में रिश्ता-पूरुष आधार पर कोई भी भिन्नता नहीं रही है। लेकिन नगर क्षेत्र, कस्बा क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र में अंतर रहा है। अतः हमें शिक्षकों के क्षेत्र या स्तर पर नहीं बोटना चाहिये बल्कि “शिक्षक” मानकर ही उसके प्रति समान व्यक्त करना चाहिये।

2) शिक्षक को बाल मनोविज्ञान का विशेषज्ञ माना जाता है। जिसके आधार पर वह बच्चों को उनकी मन चाही रोप देता है और उनका सर्वगती विकास भी करता है। इसी मनोविज्ञान का प्रयोग सेवानिवृत्त शिक्षक स्वयं की अभिवृत्ति को सकारात्मक बनाने के लिये और समस्या समाधान से निम्न प्रकार से कर सकता है:—

(अ) जीवन के प्रति अभिवृत्ति को प्रभावशाली बनाने के लिये अध्यापकों को व्यक्त दृष्टिकोण अपनाना चाहिये, जिससे उनके मन में जीवन के प्रति मोह विकसित न हो सके बल्कि परिवर्तन का भाव विकसित हो।

(ब) भारतीय संस्कृति की विशेषता “कर्तव्य करो, फल की चिंता न करो,” पर पूर्ण
विश्वास रखना चाहिये। इससे शिक्षक के मन में निराशा के भाव, और सफलता के भाव जागृत न हो सकेंगे।

(स) शिक्षा का अर्थ व्यवसाय निपुणता के साथ-साथ मानवीय गुणों का विकास भी मानना चाहिये, ताकि प्रत्येक व्यक्ति अपने कार्यों के द्वारा समाज और राष्ट्र का मला कर सकता है।

(द) मनोविज्ञान का ज्ञान व्यक्ति के व्यवहार मूल्योंके स्पर्श होकर सकारात्मक निदान तक समाप्त होता है। इससे सेवानिवृत्त व्यक्ति (सिती-पुरुष) शिक्षक स्वयं का अध्ययन आसानी से कर सकता है। और उसके आधार पर अन्य का अपने प्रति सकारात्मक व्यवहार बना सकता है।

(व) परिवार या समाज से मिले संस्कार या व्यवहार को मनोविज्ञान जानने वाला व्यक्ति डिफेंस मैकेनिज्म के द्वारा सकारात्मक बना सकता है। इस प्रकार से उसमें निराशा के भाव, तनाव, भावना प्रथियों आदि उत्पन्न नहीं हो पाएंगी और मनोविज्ञानिक रूप से वे बीमार नहीं हो पाएंगे।

3. सेवानिवृत्त शिक्षकों को अपनी क्रियाशीलता को जारी रखना चाहिये ताकि उनके अनुभव, ज्ञान और विचार परिपक्वता से समाज लाभान्वित हो सके और सेवानिवृत्ति के पश्चात् वे लोग निक्रिय भी न रहे। शोषकर्ताओं निम्न बांधने आवश्यक मानता हैः

(अ) सेवानिवृत्त शिक्षक-शिक्षिकाओं अपने परिवार में, पड़ोस में और समाज में बच्चों में नागरिक तथा मानवीय गुणों का विकास करने में सहयोग दं, ताकि बच्चों में नागरिक चेतना का भाव विकसित हो सके।

(ब) आज के भौतिकवादी युग में शिक्षा का वातावरण बनायें, इससे बच्चों में शिक्षकों के प्रति तथा शिक्षा के प्रति सम्मान स्थापित हो सके।

(स) भारतीय संस्कृति एवं सम्प्रति के विकास को सेवानिवृत्ति के पश्चात् आसानी से किया जा सकता है। उनमें सत्य, शिवम् तथा सुन्दरम् के भावों का विकास अपने सामुद्रेश्य तरकों के द्वारा किया जाना चाहिये।

(द) शिक्षा प्रसार, परिवार नियोजन, अहिंसा का प्रचार सेवानिवृत्ति के पश्चात् शिक्षकों द्वारा किया जा सकता है। इससे स्वयं को क्रियाशील रखकर सामाजिक शिक्षा का प्रसार भी होगा।

(य) बच्चों में मनोरंजन के साधन, देशातन, खेलकूद, शारीरिक सीटीव और सोसाइटिक पर्याय आदि का आयोजन करके स्वयं को क्रियाशील बनायें ताकि स्वयं को सेवानिवृत्ति की भावना प्राप्ति से दूर रख सकें।
4. अभिवृद्धि और समस्याओं की सहसंबंधित तालिका से स्पष्ट होता है कि प्रत्येक क्षेत्र एवं राष्ट्र पर धनात्मक समबन्ध रहा है। अतः सेवानिवृत्त अध्यायाएँ (स्टर्ट-पुरुष) में समानता अधिक रही है और भिन्नता कम। सेवानिवृत्त शिक्षकों में स्वतंत्र भाव, प्रभुत्व, सामाजिकता, अनुशासन, तनाव आदि विशेषताओं देखने का मिलती है। ये सामान्य व्यक्तियों की विशेषताओं हैं, लेकिन इनकी स्वीकृति व्यक्ति में सक्रियता तथा अस्वीकृति व्यक्ति में निष्क्रियता का सृजन करती है। अतः सेवानिवृत्त शिक्षक को समाज द्वारा स्वीकार करने वाला भविष्य का नेतृत्व पल्लवित किया जा सकता है।

5. नगर क्षेत्र, कस्बा क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्रों से सेवानिवृत्त हुये शिक्षकों की अभिवृद्धि समान रही है। इसमें प्रशासन तथा समाज को समान समान के भाव का विकास करना चाहिये। इनके सम्मेलन के आयोजन होने चाहिये ताकि सभी की समस्याओं का समाधान हो सके। इस हेतु शोधकर्ता निम्न बातों पर ध्यान आकर्षित करता है:—

(अ) सेवानिवृत्त शिक्षकों का एक संगठन बने जो सभी की समस्याओं का समाधान समान रूप से करे।

(ब) सेवानिवृत्त शिक्षकों को सामाजिक निर्देशन एवं परामर्श मिलता रहे ताकि वे अपने मनोवैज्ञानिक और शारीरिक दृष्टिकोणों के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण बना सकें।

(छ) परिवार में उनको समान, स्वतंत्रता तथा अधिकार मिले, जिससे उनके मन से “अनवांटेड व्यक्ति” का दुर्भाग्य निकल सके।

(द) सरकार को, सामाजिक संस्थाओं को समय-समय पर गोष्टियाँ, सेमीनार, वार्ताये आयोजित करनी चाहिये, जिसमें ये लोग भाग लेकर अपने विचारों को रख सकें और हम उनका हल खोज सकें।

6. प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सेवानिवृत्त शिक्षकों को दोहरी भूमिका का सेवानिवृत्ति के परस्पर भी निर्वाह करना होता है। एक तरफ उनको परिवार का बोझ ढोना होता है तथा दूसरी तरफ समाज की अपेक्षाओं को पूरा करना होता है। इस हेतु सामान्य तथ्य प्रस्तुत है:—

(अ) सेवानिवृत्ति के समय “प्रतिभा पतलायन” को शिक्षा के क्षेत्र में भी रोकना चाहिये ताकि उनके परिपक्व अनुभवों से राष्ट्र का लाभ हो सके।

(ब) सेवानिवृत्ति के समय सभी प्रकार के देहों का भुगतान एकदम से होना चाहिये ताकि वह अपने परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करके सन्तोष प्राप्त कर सकें।

(छ) आर्थिक स्वावलम्बन, हेतु सेवानिवृत्त व्यक्ति को समय पर पैन्सन का, बैंक द्वारा भुगतान देना चाहिये ताकि वे खर्चों की बेईमानी से बच सकें और समान स्वस्थ जीवन यापन कर सकें।
समय-समय पर चिकित्सकों द्वारा केवल लगाये जाते हैं ताकि उनमें वे निष्कृत उनमें
ये निष्कृत शारीरिक जोध करवा सकें और आने वाले रोगों से अपना बचाव कर सकें।

(2) सेवानिवृत्त शिक्षकों को अध्यापिक केन्द्रों पर भी जाना चाहिये ताकि उनमें
"सदभाव" का विकास हो सके। इस प्रकार से सुख तथा दुःख का प्रभाव निष्कृत
हो जायेगा।

(3) वर्तमान पीढ़ी और समाज के बीच "जनरेशन गेप" की बात हम समाज करना
चाहिये। क्योंकि परिवर्तन प्रकृति के निर्माण है। दोनों को ही समाज, और राष्ट्र के
हित में कार्य करना है। अतः बदले हुए मूल्य और आदर्शों में अच्छाई खोज कर
स्वीकार करें ताकि मानव समाज समृद्धि पा सके।

शिक्षार्थ अध्यापकों तथा अन्य सेवानिवृत्त को सुझाव

प्रस्तुत अध्याय का महत्व उन सभी सेवानिवृत्त स्त्री-पुरुष के लिये
हो सकता है जो शासकीय अर्थशासकीय, तथा अर्थशासकीय सेवाओं में लगे भी हैं या
सेवानिवृत्त भी हो गये हैं। शिक्षकों को आधार मानकर जन
साधारण जन सात का सच तथा जीवन-यापन में आने वाली समस्याओं को केन्द्र मानकर यह
अध्याय किया गया है। शिक्षक एक सामाजिक प्राप्ति है, साथ ही साथ वह एक निर्देशन
dेने वाला भी है जिससे भविष्य के नागरिकता तथा राष्ट्र निर्माता तैयार होते हैं। अतः
शोधकर्ता अपने अध्याय के निर्देश के आधार पर कुछ सुझाव प्रस्तुत करता है :-

(1) महत्त्व गौरवीय का कथन है कि व्यक्ति की कथनी और कर्मों में अन्तर नहीं होना
चाहिये। अतः शिक्षा के क्षेत्र से जो शिक्षक सेवानिवृत्त हुये हैं उनको चाहिये कि
वे जो सलाह, आदर्श अन्य लोगों को बता रहें हैं, उनका व्यवहार में पालन स्वयं करें,
ताकि उनसे प्राप्त निकाशों से सभी लाभार्थी हो सकें। शिक्षक अपनी सेवा में सभी
छात्र-छात्राओं को अच्छा तथा आदर्श बनने की शिक्षा देता रहता है, लेकिन वह
अपनी व्यक्ति आदर्शवान है, जिसमें बनाये गये आदर्श बनने का कितना पालन करता
है, पर विचार करें। इस से सेवानिवृत्त शिक्षकों के अन्य कथनी और कर्मों
में समानता रखकर कार्य (जीवन-यापन) करना चाहिये ताकि उसका व्यक्तित्व
एक दिखाया उसके साथ समाप्ति न रह जाये बल्कि वास्तविक लगे।

(2) शिक्षा का प्रारूप पूर्ण भारतीय होना चाहिये। इसमें शिक्षक का व्यक्तित्व भारतीय
सम्पत्ति एवं संस्कृति से आत्म-प्रौद्योगिक हो जिससे वह बच्चों को समझ सके, प्रेरित कर
सके, और शारीर मूल्यों का उनमें समावेश कर सके। यह कार्य सेवार्थ शिक्षक ही
बल्कि सेवावृत्ति शिक्षक अपने परिवार में, पड़ोसियों में, मित्रों में तथा अन्य सामाजिक व्यक्तियों को अपने अनुभव तथा ज्ञान से लामान्यता कर सकते हैं। सेवावृत्ति शिक्षक का सबसे बड़ा कार्य निरीक्षण तथा परीक्षण करना होता है। इससे समाज के सभी वर्गों तथा आयुर्वेद के लोगों को उपयुक्त दिशा निर्देश प्राप्त होता रहता है।

(3) आज मनोविज्ञान का उपयोग प्रत्येक क्षेत्र में बढ़ता जा रहा है। जीवन को सफल बनाने के लिये सहयोग, सहानुभूति तथा प्रतियोगिता की आवश्यकता होती है। सेवावृत्ति व्यक्ति को चाहिये कि वह अपने ज्ञान, अनुभव के द्वारा अन्य लोगों का भरसक सहयोग करे तथा जो बच्चे या लोग पिछड़े हैं उनको साथ सहानुभूति प्रदर्शित करके उनके मनोबल को आगे बढ़ायें, साथ ही साथ उनको, प्रतियोगियों (मेहनत) करने का निर्देश भी दे। इस तरह से सेवावृत्ति शिक्षक अपने मनोविज्ञान का प्रयोग करते हुए स्वयं को क्रियाशील रख सकेंगा।

(4) आज सेवावृत्ति का अर्थ “जीवन का अन्त” बदल चुका है। इस का नवीन अर्थ जीवन को नई दिशा देना और अपने बारे में शान्तिपूर्वक बेठकर सोचना तथा उन सभी इच्छाओं को पूरा करना, जिनको आपने पदानुपूर्व न समझकर छोड़ दिया था। मनोचिकित्सकों का मत है कि सेवावृत्ति की तैयार स्वयं व्यक्ति को भी करनी है और साथ ही परिवार के सदस्यों को भी। अतः हमारा सुझाव है कि सेवावृत्ति शिक्षक या जन सामान्य को, मानसिक रूप से स्वयं को तैयार करना और परिवार के अन्य सदस्यों को इसमें सहयोग बनायें रखना, आवश्यक हो जाता है।

(5) सेवावृत्ति शिक्षक को अधिक क्रियाशील होकर घर-परिवार को मदद करनी चाहिये। इससे उनके शारीरिक अवयव सक्रिय रहेंगे और स्वस्थ्य भी बढ़ी रहेगा। मनोचिकित्सक डॉ. अप्रावल का भी मत है कि सेवावृत्ति लोगों को सुविधा जग कर घर के उपयोगी कार्यों को निपटाना चाहिये, नृत्यातिक करना चाहिये, उपयुक्त नास्ता तथा भोजन लेना चाहिये तथा बच्चों को पढ़ने में सहायता करनी चाहिये और हलका व्यायाम करके शरीर को स्वस्थ्य रखना चाहिये।

(6) सेवावृत्ति व्यक्ति को अधिक से अधिक आत्मनिःसंबंध बनना चाहिये ताकि परिवारी सदस्य उसको बोझा न समझें बल्कि उनको उपयुक्त समान भी दें। उनकी घर के कार्यों में हाथ बढ़ाना चाहिये और ऐसे कार्यक्रम बनायें जो परिवार के लिये, बच्चों के लिये और समाज के लिये लाभदायक भी हों।

(7) आज भौतिकवादी संस्कृति के प्रभाव में सम्पूर्ण संसार आ रहा है। यदि सेवावृत्ति
शिक्षक अपने ट्रैडिशनल मूल्यों पर ही अक्का रहता है, तो वह अपने और परिवार के बीच पीढ़ी का अन्तर स्थापित कर लेता है, जिसके कारण वह परिवार से कट सा जाता है। अतः स्वयं को पुराने विचारों से दूर रखकर नवीन के साथ जुड़ना चाहिए ताकि जीवन का आनन्द भीम के साथ बोंट कर लिया जा सके।

(8) आज शिक्षा का पूर्ण व्यवसायीकरण हो चुका है। अतः नई पीढ़ी अपनी उपयोगिता के आधार पर शिक्षा प्राप्त करती है। इससे यदि सेवानिवृत्त शिक्षक अपनी पसंद या ना पसंद को लागू करना चाहता है, तो वह सूक्ष्मता या हतासा ही पैदा करती है। अतः बच्चों के साथ मनोत्तर आधार देकर उनको प्रोत्साहित करें ताकि वे अपनी पसंद और ना पसंद के द्वारा जीवन को आगे बढ़ा सकें।

(9) सेवानिवृत्त शिक्षक को सामाजिक-धार्मिक संस्थाओं का क्रियाशील सदस्य बनकर उनका सम्मिलन और मार्गदर्शन करना चाहिए। इससे ये अपने अर्जित ज्ञान का लाभ भी संस्था को दे सकेंगे और उनके आधार को सक्रिय तथा दृढ़ आधार भी प्रदान कर सकेंगे। इस कार्य में मन लगाकर, कार्य करने से स्वयं का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा संस्था को निश्चल, विश्वसनीय, सहयोगी, कार्यकर्ता भी प्राप्त होगा।

(10) सेवानिवृत्त शिक्षक या अन्य व्यक्ति को “कंकशनल” रोगों से बचना चाहिए। इस रोग का जन्म काल्पनिक विचारों से उत्पन्न विभिन्न “भ्रम और यामोह” से होता है, जो धीरे-धीरे सेवानिवृत्त व्यक्ति को मनोदीहक रोगी बना देते हैं। इसमें नकारात्मक मानसिक सोच के कारण व्यक्ति में उच्च रक्तचाप, गधुमेह, एन्जैलियुरा, हार्टआटेक, एलर्जी, जोड़ों के दर्द, दमा, स्वास्थ्य फूलना, पैटिक अस्तर, नपुंसकता, मासिक बन्द होना, गंजापन आदि रोग उत्पन्न हो जाते हैं। अतः इन लोगों को अपने अर्थ चेतन मन में भ्रम और यामोह को कोई भी स्थान नहीं देना चाहिए। इस प्रकार से वे समय तथा धन दोनों की बर्बादी को बचाकर स्वयं भी शांति से रह सकते हैं और परिवार को भी सेवानिवृत्त जितना से मुक्त करा सकते हैं।

(11) शोधकर्ता के अनुसार सेवानिवृत्त शिक्षकों को निम्न बातों पर ध्यान करना चाहिए –
(अ) जीवन में अनुशासन का पालन प्रत्येक क्षेत्र में करना चाहिए ताकि शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य रहे।
(ब) मेडिकल पालिसी का उपयोग करें।
(स) अपने मित्रों से मिलें, गप्शेष करें और उनके अघ जाएं और बुलाएं।
(द) प्रतिदिन व्यायाम, योगा अवस्था करें।
(य) सक्रियता बनाये रखने के लिये सामाजिक कार्यों को करें।
(र) पुराने दिनों की बातों को न करें, जब भी करें तो वर्तमान के लाम की बातें करें।
(ल) पुराने और नवीन विचारों में सामजिक बिठाकर जीवन का आनन्द लें, ताकि पूरा परिवार तुम्हारा बना रहे।
(व) बच्चों को टोकरों नहीं, अपने सिखाना थोपे नहीं, बल्कि तर्क की कसौटी पर बसकर उपयोगी दृष्टिकोण अपनायें।

यदि सेवानिवृत्त शिक्षक तथा शिक्षकायें उपर्युक्त सुझावों का सामान्य तौर पर पालन करते हैं तो उनका मानसिक सोच सकारात्मक होकर परिवार तथा समाज के लिये सहायक होगा तथा वे अपनी उन इच्छाओं तथा आकांक्षाओं की पूर्ति भी कर सकते हैं जिनकी पूर्ति इस अवस्था में आवश्यक होती है। इसके साथ उनकी मनोवैज्ञानिक, शारीरिक, आधिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक आदि समस्याओं का समाधान भी रचते हो सकेगा।

शोधार्थियों हेतु सुझाव

शोधकर्ता ने प्रस्तुत अध्ययन में अध्यापक व्यवसाय के साथ जुड़े उन प्रायम्यों तथा माध्यमिक सेवानिवृत्त रित्री-पूरुष अध्यापकों का, नगर क्षेत्र, कर्म क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र आदि परिवेशों के आधार पर, अध्ययन प्रस्तुत किया है। इस अध्ययन में यह ज्ञानना की कोशिश की गई है कि, सेवानिवृत्त अध्यापक अपनी अभिवृत्ति और समस्याओं के साथ कैसे जीवन व्यतीत करता है। इस हेतु शिक्षा स्तर मिर्नता, यौन मिर्नता, क्षेत्रीय परिवेश मिर्नता आदि के प्रभाव को आंकें परिवर्तित के में लेकर उनकी समस्याओं के प्रभाव का आंकेंन का प्रभाव तथा विवेदण प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन ने कुछ प्रश्नों को जन्म दिया है, जिनको लिये उपयुक्त उत्तरों की आवश्यकता प्रतीत होती है। इससे अध्ययन को भी पूर्णता मिलेगी तथा नये आयामों पर अध्ययन होकर सेवानिवृत्त शिक्षकों के जीवन यापन में तात्क्षण मिलेगा। अतः भविष्य के शोधार्थियों के लिये प्रस्तुत नये तथा आकर्षण के केंद्र बन सकते हैं :–

1) अध्ययन न्यारदर्श सिर्फ 600 सेवानिवृत्त रित्री-पूरुष अध्यापकों पर किया गया है।
इसमें अधिक उपयुक्तता और वैद्यता लाने के लिये बड़े न्यारदर्श पर अध्ययन किया जा सकता है।

2) परिवेश को, एक मुख्य परिवर्तित मानकर, स्वतंत्र रूप से सेवानिवृत्त अध्यापकों की अभिवृत्ति और समस्याओं का अध्ययन किया जा सकता है।
3. वर्तमान में माध्यमिक स्तर पर गुणात्मक शिक्षा का प्रसार करने वाले केन्द्रीय विद्यालय, निजी विद्यालय तथा विद्या-भारतीय आदि शिक्षण संस्थाओं से निर्मत अध्यापकों की अभिवृद्धि और समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

4. सरकारी तथा निजी शिक्षण संस्थाओं से सेवानिवृत्त अध्यापकों की अभिवृद्धि, समस्यायें तथा आर्थिक सामाजिक स्तर आदि परिवर्तनों पर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

5. प्रायमरी तथा माध्यमिक स्तर के सेवानिवृत्त सर्वर्ण तथा असर्वर्ण अध्यापकों की सेवानिवृत्ति के पश्चात् उत्पन्न समस्याओं और जीवनयापन का अध्ययन किया जा सकता है। इससे अध्यापक समाज में, सामाजिक समानता तथा एकरसता स्थापित की जा सकती है।

6. सामाजिक – सौस्थ्यिक मूल्यों में परिवर्तन के कारण सेवानिवृत्त व्यक्तियों में समायोजन स्थापित की समस्या विकसित रूप से रही है। अतः विभिन्न क्षेत्रों में सेवानिवृत्त अध्यापकों का समायोजन तथा अनुकूलन का अध्ययन भी किया जा सकता है।

7. प्रस्तुत अध्ययन में सबसे अधिक प्रभाव “सन्मोदज्ञानिक” समस्या का रहा है। इसके कारण, सामाजिक या वंशानुक्रमीय हो सकते हैं, का अध्ययन किया जा सकता है, ताकि सेवानिवृत्त अध्यापकों के मन से “सेवानिवृत्ति का भय” निकाला जा सके।

8. प्रस्तुत अध्ययन का क्षेत्र बुद्धिलच्छ का झोंसी जनपद रहा है जो सभी दृष्टियों से पिछड़ा माना जाता है। अतः इस अध्ययन को विकसित, विकासशील तथा अधिविकसित क्षेत्रों पर भी किया जा सकता है ताकि अध्यापक समस्या का समाधान स्काराटमक रहे और ये लोग सुखी जीवन-यापन कर सकें।

9. शोधकार्य ने प्रस्तुत अध्ययन का सेवानिवृत्त अध्यापकों की अभिवृद्धि और समस्याओं को केन्द्र मानकर किया है तथा स्वरूपमित उपकरण के द्वारा तथ्यों का आँकलन किया है। इसी अध्ययन को एक वृहद आकार पर भी का सामात्कार लेकर समस्याओं को जाना जायें, और फिर मुख्य समस्याओं पर एक प्रश्नावली तैयार की जायें इसके पश्चात् एक प्रश्नावली उनसे भरवाई जायें, तथा एक पर स्व निरीक्षण के द्वारा आँकलन किया जायें। इस प्रकार से प्राप्त तुलनात्मक निष्कर्ष सेवानिवृत्त अध्यापकों को एक नई दिशा दे सकते हैं ताकि उनका जीवन सुखमय बन सके।
10) प्रस्तुत अध्ययन को सेवानिवृत्ति के आधार पर नगर क्षेत्र, कस्बा क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र में बोता गया है। जबकि ये लोग विभिन्न क्षेत्रों के रहने वाले रहे हैं, सिफर व्यवसाय के लिये क्षेत्र विशेष में बस गये हैं। इनके व्यक्तिगत गठन, व्यवहार, सोच, तथा निर्देशन आदि पर उनके पारिवारिक तथा शिक्षा प्राप्‍त क्षेत्रों का प्रभाव रहा है। अत: इस भिन्नता को ध्यान में रखकर भी अध्ययन किया जा सकता है।

11) सेवानिवृत्त शिक्षकों के मूल्यों, अभिवृत्ति और समस्याओं को लेकर अध्ययन किया जा सकता है ताकि ट्रेडिशनल मूल्य और परिवर्तित मूल्यों, उनकी सोच तथा समस्याओं पर क्या प्रभाव डालते हैं, पता लगा सके।

12) प्रस्तुत अध्ययन में महिलाओं सकारात्मक अभिवृत्ति वाली और कम समस्या वाली आई है, अत: इनके कारणों का अलग से अध्ययन किया जा सकता है।

13) उत्तर प्रदेश शासन की आरक्षण नीति के अन्तर्गत आरक्षण नीति के आधार पर प्राइमरी तथा माध्यमिक स्तर के सेवानिवृत्त अध्यापकों की अभिवृत्ति तथा समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है ताकि आरक्षण नीति के दुष्प्रभाव को शिक्षा जगत से निजात गिले और सेवानिवृत्त सभी शिक्षकों के सम्मान में बृद्धि होगी।